4

प्रतिष्ठित, नव-प्रतिष्ठित तथा आधुनिक अर्थशास्त्री

[CLASSICAL, NEO-CLASSICAL AND MODERN ECONOMISTS]

प्रतिष्ठित अथवा परम्परावादी अर्थशास्त्री (THE CLASSICAL ECONOMISTS)

अर्थशास्त्र में प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र (Classical School of Economics) से तात्पर्य उस विचारधारा से है जिसका प्रारम्भ एडम स्मिथ द्वारा किया गया और जिसको रिकार्डो, माल्थस, से, जॉन स्टुअर्ट मिल, आदि ने विकसित किया। यह एक विचारधारा (School) न होकर एक परम्परा है जिसमें समानता सिद्धान्तों के आधार पर न होकर पद्धतियों के आधार पर होती है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की वह परम्परा अभी भी समाप्त नहीं हुई। नव-प्रतिष्ठितवाद (New-Classicism) के नाम से वह अभी भी जीवित है और उसमें मार्शल, पीगू, टॉसिंग, सैमुएलसन जैसे महान् अर्थशास्त्री हुए हैं।

वर्तमान युग के सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री जे. एम. कीन्स के अनुसार प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र रिकार्डो के अनुयायियों का अर्थशास्त्र है तथा प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों से अभिप्राय रिकार्डो के अनुयायियों जिनमें जॉन स्टुवार्ट मिल, एल्फ्रेड मार्शल, एजवर्थ तथा पीगू भी सम्मिलित है से है। मार्क्स ने अर्थशास्त्र में प्रतिष्ठित शब्द का प्रयोग रिकार्डो तथा उनके पूर्ववर्ती अर्थशास्त्रियों जिसमें स्मिथ भी सम्मिलित है, के लिए किया था।

यदि अर्थशास्त्र की हम एक पेड़ के रूप में कल्पना करें तो इसकी जड़ में यूनानी, रोमन, मध्ययुगीन, वणिकवादी एवं प्रकृतिवादी विचारधाराएं होंगी। इसका तना प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के रूप में होगा और विभिन्न विचारधाराएं इसकी शाखाओं के रूप में होंगी। तात्पर्य यह है कि सम्पूर्ण आधुनिक अर्थशास्त्र प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के आधार पर ही निर्मित हुआ है भले ही विभिन्न विचारधाराओं ने प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की तीव्र आलोचना की हो। यहां तक कि समाजवादी अर्थशास्त्र जिसका सूत्रपात सिसमांदी, प्रूधों, रोडबर्ट्स, कार्ल मार्क्स, आदि ने किया उसका भी आदि स्रोत प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र ही है।

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की यह परम्परा एडमस्मिथ के समय से प्रारम्भ हुई और इसकी जन्म तिथि 1776 मानी जा सकती है क्योंकि इसी वर्ष एडम स्मिथ की अमर कृति '**राष्ट्रों की सम्पत्ति**' (*Wealth of Nations*) प्रकाशित हुई। इस परम्परा में समय-समय पर महान् आचार्य हुए हैं और बीच-बीच में इसका महत्व कम भी होता रहा है अर्थात् ऐसे युग भी आये हैं जब इसकी प्रगति बहुत कम हो गयी है।

विकास के क्रम को ध्यान में रखते हुए हम प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र को निम्नलिखित भागों में बांट सकते हैं :

(क) एडम स्मिथ का युग—इस युग के प्रधान अर्थशास्त्री स्वयं एडम स्मिथ (1723-1790) तथा जेरेमी बेंथम (1748-1832) कहते जा सकते हैं। स्मिथ ने जहां अर्थशास्त्र को अन्य विज्ञानों के समान एक सुसंगठित रूप दिया बेंथम ने उसे नवीन दिशा तथा एक नया आदर्श प्रदान किया और इन दोनों के योगदान के लिए अर्थशास्त्र अभी भी ऋणी है।

Scanned by PDF Scanner

(ख) रिकार्डो तथा माल्थस का युग—इस युग ने अर्थशास्त्र को कई महान् विचारक दिये जिन्होंने एडम स्मिथ की परम्परा को बहुत आगे बढ़ाया। इस युग के प्रधान अर्थशास्त्री अग्रलिखित थे :

1. टॉमस रौबर्ट माल्थस (इंगलैण्ड, 1766-1834),
2. डेविड रिकार्डो (इंगलैण्ड, 1772-1823),
3. रौबर्ट टौरेन्स (इंगलैण्ड, 1780-1835),
4. जे. बी. से (फ्रांस, 1767-1820),
5. जेम्स मिल (इंगलैण्ड, 1773-1836),
6. जौन रैम्से मैककुलोच (इंगलैण्ड, 1773-1836)।

रिकार्डो, जे. बी. से तथा जेम्स मिल न केवल समकालीन थे बल्कि मित्र भी थे और उनके पत्राचार से पता चलता है कि तत्कालीन विद्वानों में तीव्र मतभेद भी थे और एक-दूसरे की सहायता की प्रवृत्ति भी थी। स्मिथ ने बहुत से सिद्धान्तों को केवल सूत्र रूप में कहा था जिनको इस युग ने विकसित और संशोधित किया। आज हम अर्थशास्त्र के जिन सिद्धान्तों को मानते हैं उनमें से अधिकांश का प्रारम्भ इसी समय हुआ। मूल्य के सिद्धान्त, वितरण के सिद्धान्त, मुद्रा-मात्रा सिद्धान्त, इसके कुछ उदाहरण हैं।

(ग) जॉन स्टुअर्ट मिल का युग—जॉन स्टुअर्ट मिल के युग में अर्थशास्त्र अपने चरम उत्कर्ष पर पहुंचा और उनके बाद ही उसका पतन भी प्रारम्भ हुआ। इस युग के प्रधान अर्थशास्त्री निम्नलिखित थे :

1. हेनरी वॉन थुनेने (जर्मनी, 1783-1850),
2. नराड विलियम सीनियर (इंगलैण्ड, 1790-1864),
3. हेनरी चार्ल्स कैरे (अमरीका, 1793-1879),
4. जॉन स्टुअर्ट मिल (इंगलैण्ड, 1806-1873)।

(घ) मिल से मार्शल तक—मिल के बाद प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की प्रगति रुक सी गयी परन्तु परम्परा और पद्धति समाप्त नहीं हुई। इस युग में में इस परम्परा के निम्नलिखित प्रधान अर्थशास्त्री हुए हैं :

1. जे. ई. केयरनीज (इंगलैण्ड, 1824-1875),
2. हेनरी सिजविक (इंगलैण्ड, 1838-1900),
3. फ्रांसिस ए. वॉकर (अमरीका, 1840-1897),
4. निकालसन (इंगलैण्ड, 1850-1927)।

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की विशेषताएं

सामान्य रूप से प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की निम्नलिखित विशेषताएं बतायी जा सकती हैं :

(1) **अर्थशास्त्र एक विज्ञान माना गया है**—अर्थात् अर्थशास्त्र को वही स्थान दिया गया है जो अन्य प्राकृतिक विज्ञानों को। पूर्वकाल के अर्थशास्त्री अर्थ-नीति के प्रतिपादक थे अर्थात् समाज की आर्थिक व्यवस्था कैसी हो और आर्थिक आचरण किस प्रकार का हो यह उनके अध्ययन का प्रधान विषय था। एडम स्मिथ, रिकार्डो, माल्थस, आदि ने आर्थिक व्यवहार के वैज्ञानिक आधार खोजे और निश्चित किया कि प्रकृति की अन्य घटनाओं के समान आर्थिक क्रियाओं का संचालन भी कुछ प्राकृतिक नियमों के द्वारा होता है। इसका अर्थ यह नहीं कि आर्थिक सुधारों का उन्होंने विरोध किया परन्तु उनकी धारणा थी कि आर्थिक सुधार भी प्राकृतिक नियमों के अनुसार ही होते हैं—बिना नियमों का ज्ञान हुए सम्भव नहीं है जैसे कि बिना चिकित्सा विज्ञान के रोग दूर होना सम्भव नहीं।

(2) **विश्लेषण की विशेष पद्धति**—यह प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की मुख्य विशेषता है। इसे अमूर्त पद्धति (Abstract Method) भी कहा जाता है। रिकार्डो, मिल और कार्ल मार्क्स ने इस प्रणाली का बहुत प्रयोग किया है। चूंकि अर्थशास्त्र एक प्राकृतिक विज्ञान है अतः उसके कुछ प्राकृतिक नियम भी होने चाहिए जो कि घटनाओं का नियमन करते हैं। अर्थशास्त्र के नियम मानव प्रकृति के नियम हैं और सामान्य परिस्थितियों में वे कार्य करते हैं, ऐसा माना गया। इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया कि व्यावहारिक जीवन में सामान्य परिस्थितियां बहुधा देखने में नहीं आतीं। इस प्रकार से यह नियम व्यावहारिक जगत से दूर के जगत के नियम हो गये। इस विशेषता के कारण ही इतिहासवादी, संस्थावादी और राष्ट्रवादी अर्थशास्त्रियों ने इस पद्धति की तीव्र आलोचना की है।

Scanned by PDF Scanner

(3) **आत्महित** (Self-interest) **का सिद्धान्त**—एडम स्मिथ तथा बेन्थम ने इसका प्रारम्भ किया था परन्तु किसी-न-किसी रूप में इसको सब बड़े अर्थशास्त्रियों ने स्वीकार किया। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र यह मान कर चलता है कि मनुष्य अपने व्यक्तिगत हित से संचालित होता है और यही आर्थिक आचरण का तथा अर्थशास्त्र का भी मुख्य आधार है। स्मिथ ने आत्महित में सार्वजनिक हित भी देखा परन्तु आजकल इसकी सच्चाई में सन्देह उत्पन्न हो गया।

(4) **मुक्त अर्थव्यवस्था**—यह विचार मुख्यतः प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की देन है। स्मिथ का कथन था कि आत्महित में ही सबका हित है। बेंथम, मिल, आदि ने इसी आधार पर सामाजिक तथा आर्थिक मामलों में पूर्ण व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का उपदेश दिया। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का विचार ही समाज में लोकतन्त्र और मुक्त अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हुआ है। यही प्रधान कारण है कि लोकतान्त्रिक समाज में मुक्त अर्थव्यवस्था भी पायी जाती है। राजनीतिक रूप से स्वतन्त्र समाज आर्थिक नियन्त्रण को भी सहन नहीं कर सकता। मिल में हम मुक्त समाज के औचित्य के बारे में सन्देह देखते हैं। कीन्स ने यद्यपि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की तीव्र आलोचना की है परन्तु उनकी विश्लेषण प्रणाली मार्शल इत्यादि को ही देन है। कीन्स ने भी मुक्त अर्थव्यवस्था को समाज के लिए हानिप्रद बताया है।

फिर भी मूलरूप से प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री मुक्त अर्थव्यवस्था के ही समर्थक रहे हैं भले ही कुछ मामलों में वे नियन्त्रण के पक्षपाती हों। इसका कारण स्पष्ट है। अर्थशास्त्र का वैज्ञानिक विश्लेषण मुक्त अर्थव्यवस्था में ही सम्भव है। मूल्य का सिद्धान्त वहां ही महत्व रखता है जहां मूल्य आर्थिक शक्तियों से निर्धारित होता है। जहां मूल्य राज्य की की नीति द्वारा निर्धारित होता है वहां सिद्धान्त का क्या महत्व है? वहां शासन की नीति ही प्रधान कारण है।

(5) **पूर्ण प्रतियोगिता** (Perfect Competition)—यह प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की एक अन्य मान्यता है। इस विचारधारा के लगभग सभी सिद्धान्त उसी अवस्था में सही होते हैं जब बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता हो। रिकार्डो का लगान सिद्धान्त, मिल का मूल्य का सिद्धान्त, से का बाजार का सिद्धान्त जिस पर रोजगार की मात्रा निर्भर होती है—पूर्ण प्रतियोगिता में ही सही होते हैं। कहना नहीं होगा कि पूर्ण प्रतियोगिता स्वयं एक काल्पनिक अवस्था है।

(6) **निराशावाद** (Pessimism)—**प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र में निराशावाद की झलक है।** यद्यपि मुख्य रूप से माल्थस तथा रिकार्डो को ही निराशावादी कहा गया है परन्तु पूरे अर्थशास्त्र में ही निराशावाद की थोड़ी-बहुत छाया दिखायी देती है। जनसंख्या का सिद्धान्त भविष्य का बहुत निराशाजनक एवं भयावह चित्र खींचता है। रिकार्डो का लगान का सिद्धान्त निराशावादी है और उनका मजदूरी का सिद्धान्त बताता है कि मजदूरों को जीवन-निर्वाह की मजदूरी से अधिक पाने की आशा नहीं करनी चाहिए। उनकी स्थिर अवस्था (Static State) की कल्पना निराशापूर्ण है। उत्पत्ति ह्रास के नियम को प्रतिष्ठित लोगों ने आवश्यकता से अधिक महत्व देकर उद्योगों का भविष्य अन्धकारमय बताया है। एडम स्मिथ ने यद्यपि प्राकृतिक विकास को लाभप्रद बताया है परन्तु उनका आशावाद वितरण का विवेचन करने में उनका साथ छोड़ गया है।

(7) **विधायक पद्धति** (Positive Method)—प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की एक अन्य विशेषता इसकी विधायक अध्ययन पद्धति (Positive approach) है। यह अन्य विचारधाराओं से इसे अलग करती है। इतिहासवादी संस्थावादी आदि विचारधाराओं ने बहुत-सा निषेधात्मक चिन्तन किया है—विधायक विचारों को कम महत्व दिया है। स्मिथ, रिकार्डो, मिल, आदि ने भी खण्डन किया है परन्तु उनका निर्माण पक्ष अधिक सशक्त है।

(8) **अर्थव्यवस्था स्वसंचालित होती है**—यह भी प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की मान्यता थी। यदि कोई असन्तुलन पैदा होता है तो वह अपने आप ठीक हो जाता है। अति उत्पादन, बेकारी, जनसंख्या वृद्धि आदि का उपचार भी अर्थव्यवस्था में ही छिपा हुआ है। आगे चलकर इसे अस्वीकार किया गया।

इस विशेषता को लगभग सभी समस्याओं में बताया गया है। उदाहरण के लिए रोजगार के सिद्धान्त के विवेचन में जे. बी. से (J. B. Say) का कथन है की पूर्ति स्वयं मांग पैदा करती है अर्थात् मुक्त अर्थ-व्यवस्था में अति-उत्पादन नहीं होता और यदि होता है तो स्वयं सीमित हो जाता है और बेकारी की समस्या हल हो जाती है। माल्थस ने इस गलती को दूर करने की कोशिश की थी।

नव-प्रतिष्ठित अथवा नव-परम्परावादी अर्थशास्त्री

(NEO-CLASSICAL ECONOMISTS)

मिल के बाद और मार्शल के पदार्पण के समय आर्थिक क्षेत्र में बड़ी तेजी से परिवर्तन हुए थे। मशीनों के बढ़ते प्रयोग, अनुसन्धानों में प्रगति, साख के उत्पादन तथा उपभोग के क्षेत्र में बढ़ते हुए चरणों तथा व्यापार चक्रों ने आर्थिक जीवन को बहुत प्रभावित किया। ऐसे समय में निश्चित रूप से ऐसे व्यक्तित्व और विचारों

Scanned by PDF Scanner

की आवश्यकता थी जो प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र को पुनः जीवित कर सके तथा प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की विचारधारा पर हो रहे आक्रमणों से उसे बचाया जा सके। ऐसे समय में एक बडे ही प्रतिभाशाली व्यक्ति प्रो. मार्शल का पदार्पण हुआ जिसने बड़ी ही गम्भीरता तथा गहनता से अर्थशास्त्र पर लगाए गए आरोपों की जांच की तथा अर्थशास्त्र में एक नवीन रक्त संचार किया। उसने प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों (विभिन्न आलोचनाओं को ध्यान में रखते हुए) पर्याप्त संशोधन करके नए आर्थिक वातावरण के अनुकूल अपने विचार प्रस्तुत किए। मार्शल के इन विचारों को नव-परम्परावाद या नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के नाम से जाना जाता है। इसीलिए मार्शल को नव-परम्परावाद का जन्मदाता अथवा प्रतिपादक कहा जाता है तथा मार्शल के अनुयायियों को नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री कहा जाता है।

नव-परम्परावादी सम्प्रदाय के प्रमुख अर्थशास्त्री निम्नलिखित हैं :

1. एल्फ्रेड मार्शल (इंगलैण्ड, 1842-1924),
2. फ्रांसिस एजवर्थ (इंगलैण्ड, 1845-1926),
3. पी. एच. विकस्टीड (इंगलैण्ड, 1844-1928),
4. ए. सी. पीगू (इंगलैण्ड, 1877-1959),
5. एफ. डब्ल्यू. टॉसिंग (अमरीका, 1859-1940),
6. श्रीमती जोन रोबिन्सन (इंगलैण्ड, 1903-जीवित),
7. पाल ए. सैमुएलसन (अमरीका, 1915-जीवित)।

इस तरह स्पष्ट है कि एडम स्मिथ से सैमुएल्सन तक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र का निरन्तर विकास हुआ है। इन सब अर्थशास्त्रियों में तीव्र मतभेद हैं परन्तु कुछ समान बातें हैं जिनके आधार पर इसको प्रतिष्ठित तथा नव-प्रतिष्ठित वर्गों में रखा गया है। मुख्य समानता विश्लेषण की प्रणाली है जिसको इन सबने अपने अर्थशास्त्र में कम या अधिक अपनाया है।

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के समानान्तर ही इसका विरोध भी चलता रहा है और इस कारण इतिहास में कई विचारधाराओं का जन्म हुआ। इन सब आलोचक विचारधाराओं में प्रधान निम्नलिखित हैं :

(1) समाजवादी आलोचक (The Socialists)—(सिसमांदी प्रूधां रॉबर्ट ओवेन, फूरिए, रोडबर्ट्स, कार्ल मार्क्स, आदि);

(2) राष्ट्रवादी आलोचक (The Nationalist)—(मुलर, लिस्ट आदि);

(3) इतिहासवादी आलोचक (The Historical School)—(रोश्चर, श्मोलर इत्यादि);

(4) संस्थावादी आलोचक (Institutionalists)—(वैबलिन, कॉमन्स, आदि);

(5) अहंवादी आलोचक (Subjective Critics)—(जैवन्स, मैजर, वालरस, आदि)।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि अर्थशास्त्र के इतिहास में विकास या तो प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के अन्दर ही हुआ है अथवा प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र से विरोध और विद्रोह के फलस्वरूप हुआ है। स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र में प्रतिष्ठित परम्परा का सबसे अधिक महत्व है।

नव प्रतिष्ठित सम्प्रदाय के अर्थशास्त्रियों में मार्शल तथा पीगू के उपरान्त एजवर्थ तथा विक्सटीड का योगदान उल्लेखनीय है। मार्शल तथा पीगू के योगदान की विवेचना आगे के अध्यायों में की गई है। यहां हम एजवर्थ तथा विक्सहीड के योगदान की संक्षिप्त विवेचना प्रस्तुत की जा रही है।

फ्रांसिस एजवर्थ (1845-1926)
(FRANCIS EDGEWORTH)

अर्थशास्त्र के छात्र एजवर्थ के नाम से परिचित हैं क्योंकि उनकी अनेक परिभाषाएं ग्रन्थों में पाई जाती हैं। यह मार्शल के समकालीन थे और मार्शल के पश्चात् कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का नेतृत्व इन्हीं के हाथों में आया। यह मार्शल की परम्परा के अर्थशास्त्री थे, परन्तु इनका व्यक्तिगत योगदान सीमित ही रहा। इनकी ख्याति *Economic Journal* नामक प्रसिद्ध शोध पत्रिका के द्वारा हुई जिसका प्रकाशन 1891 से 1926 तक इन्होंने किया। इस पत्रिका के माध्यम से बहुत-से सिद्धान्त प्रकाश में आये और कई अर्थशास्त्रियों को कीर्ति मिली।

परन्तु एजवर्थ ने सांख्यिकी के क्षेत्र में काफी कार्य किया। गणित की बहुत-सी विधियों का प्रयोग सर्वप्रथम एजवर्थ ने अर्थशास्त्र में किया। सूचना-अंक (Index numbers) में उनका योगदान था। इनके बहुत से शोध-पत्र प्रकाशित हुए थे। इनके प्रधान ग्रन्थ निम्नलिखित थे :

1. *Mathematical Psychies* (1881).
2. *Papers relating to Political Economy* (1925).

Scanned by PDF Scanner

पी. एच. विकस्टीड (1844-1927)

(P. H. WICKSTEED)

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र का गढ़ रहा है। मार्शल के समय में वहां पर कई महान अर्थशास्त्रियों का उदय हुआ। उनमें विकस्टीड का नाम उल्लेखनीय है। उनकी शिक्षा लन्दन के यूनीवर्सिटी कालेज और मैन्चेस्टर के न्यू कालेज में हुई। अर्थशास्त्र में उनकी रुचि बाद में हुई। उन पर सबसे अधिक प्रभाव आस्ट्रियन विचारधारा का पड़ा। हैने ने यहां तक लिखा है कि इस प्रभाव के कारण उनको प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र से अलग ही मानना चाहिए। परन्तु अन्य इतिहासकार उनको नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र का ही सदस्य मानते हैं और ऐसा सर्वथा उचित है।

विकस्टीड के प्रमुख ग्रन्थ

1. *Our Prayers and Our Politics* (1885).
2. *The Alphabet of Economic Science* (1888).
3. *An Essay on the Co-ordination of the Laws of Distribution* (1894).
4. *The Commonsense of Political Economy* (1910).
5. *The Scope and Method of Political Economy in the Light of Marginal Principle* (Paper) (1914).

विकस्टीड के प्रमुख विचार

(1) **उपयोगिता का विश्लेषण**—विकस्टीड आस्ट्रियन विचारधारा तथा जैवन्स से प्रभावित थे और उन्होंने उपयोगिता का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। अर्थशास्त्र को सीमान्त उपयोगिता (Marginal utility) का शब्द देने का श्रेय उन्हीं को है। अपने ग्रन्थ *The Alphabet of Economic Science* में उन्होंने इस शब्द का सर्वप्रथम उपयोग किया; बाद में सब ग्रन्थों में इसका प्रचार हो गया। इसके पूर्व इस अर्थ में जैवन्स द्वारा प्रयुक्त अन्तिम उपयोगिता (Final utility) शब्द प्रचलित थे। वस्तुतः सीमान्त उपयोगिता विकस्टीड के अर्थशास्त्र का केन्द्र बिन्दु है और इसके द्वारा उन्होंने सब आर्थिक सिद्धान्तों का विश्लेषण किया है। उदाहरण के लिए, उन्होंने रिकार्डो तथा कार्ल मार्क्स के मूल्य श्रम सिद्धान्त (Labour Theory of Value) की आलोचना इसके द्वारा की है। उनका कथन है कि वस्तु का मूल्य उसमें लगे हुए श्रम के ऊपर निर्भर नहीं होता बल्कि स्वयं श्रम का ही मूल्य वस्तु के मूल्य पर निर्भर होता है। मूल्य अधिक है इसलिए समाज अधिक श्रम करने को तैयार है। वस्तुतः यह ऑस्ट्रियन सिद्धान्त Theory of Imputation का रूपान्तर है।

(2) **पूर्ति का वक्र**—विकस्टीड का एक महत्वपूर्ण विचार पूर्ति का विश्लेषण है। उन्होंने मार्शल के मांग और पूर्ति के साम्य की आलोचना की है और लिखा है कि पूर्ति तथा मांग में कोई मौलिक अन्तर नहीं है। मूल्यों में अन्तर होने पर विक्रेता ही क्रेता और क्रेता ही विक्रेता हो जाते हैं। वस्तुतः मूल्य निर्धारण में मांग ही प्रधान तत्व है। विकस्टीड का यह विचार लोकप्रिय नहीं हो सका।

(3) **वितरण का सिद्धान्त**—अपने ग्रन्थ *Essay on the Co-ordination of the Laws of Distribution* में विकस्टीड ने वितरण की एक नवीन व्याख्या की है जो कि काफी विख्यात हुई। यह व्याख्या सीमान्त उत्पादकता (Marginal Productivity) के सिद्धान्त पर आधारित है। यद्यपि इस प्रकार की व्याख्याएं जे. बी. क्लार्क, मार्शल आदि अन्य अर्थशास्त्रियों ने भी की हैं। विकस्टीड का कथन है कि कुल उत्पादन का उत्पत्ति के साधनों में वितरण एक ही तरीके से होता है, वह है सीमान्त उपज के माध्यम से। प्रत्येक साधन का मूल्य उसकी सीमान्त उत्पादकता के द्वारा निर्धारित होता है, परन्तु यह भी कहना आवश्यक है कि विकस्टीड के इस विश्लेषण में स्पष्टता की कमी थी।

इस सम्प्रदाय में ए. सी. पीगू का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने मार्शल की महान् परम्परा को आगे बढ़ाया परन्तु उनके सिद्धान्तों का वर्णन हम कल्याणवादी विचारधारा के अन्तर्गत कर रहे हैं जिसे नव-प्रतिष्ठित विचारधारा की एक शाखा कहा जा सकता है। टॉसिंग, सेलिगमैन, सैमुएलसन, श्रीमती जॉन रौबिंसन इस विचारधारा के अन्य सदस्य हैं, परन्तु उनका वर्णन हम अन्य अध्यायों में कर रहे हैं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में ही मार्शल की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले कई अर्थशास्त्री हुए उनमें ए. डब्लू. फ्लक्स (1867-1938) तथा एस. जे. चैपमैन प्रमुख थे।

Scanned by PDF Scanner

आधुनिक अर्थशास्त्री
(MODERN ECONOMISTS)

आर्थिक विचारों के इतिहास में आधुनिक युग के महान अर्थशास्त्रियों की एक लम्बी शृंखला है जिनके विचारों का सम्पर्क मूल्यांकन अभी भी प्रीतिक्षित है। अर्थशास्त्र के अध्ययन एवं विश्लेषण में जिन प्रमुख आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है इसमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं :

(1) जे. बी. क्लार्क (J. B. Clark) अमेरिका (1847-1938)

(2) एफ. डब्ल्यू. टॉसिग (F. W. Tausig) अमेरिका (1859-1940)

(3) जे. ए. हाब्सन (J. A. Hobson) इंग्लैण्ड (1858-1940)

(4) जोसफ ए. शुम्पीटर (Joseph A. Shumpeter) आस्ट्रिया (1883-1950)

(5) आर. जी. हाट्रे (R. G. Hawtrey) इंग्लैण्ड (1879)

(6) ए. एच. हैन्सन (Alvin H. Hansen) अमेरिका (1887)

(7) लियोनल रॉबिन्स (Lionel Robins) इंग्लैण्ड (1898)

(8) जे. आर. हिक्स (J. R. Hicks) इंग्लैण्ड (1904)

(9) डी. एच. रॉबर्टसन (D. H. Robertson) इंग्लैण्ड (1890-1963)

(10) श्रीमती जोन रॉबिन्सन (Mrs. Joan Robinson) इंग्लैण्ड (1903)

(11) पी. ए. सैम्युल्सन (P. A. Samuelson) अमेरिका (1915)

(12) जे. एम. कीन्स (J. M. Keynes) इंग्लैण्ड (1883-1986)

उपरोक्त आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अतिरिक्त अन्य कई आधुनिक अर्थशास्त्री हैं, जिन्होंने अर्थशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिनका उल्लेख करना उचित होगा जैसे—प्रो. जे. एम. क्लार्क, वॉनहेयक, श्रीमती बारबारा वूटन, रैगनर, नर्क्स, बर्टिल ओहलिन, मिल्टन फ्रीडमैन, अमर्त्यसेन, गुन्नार मिर्डल, वैसिली लियोन्टिफ इर्विंग फिशर आदि। यहां पर कुछ आधुनिक अर्थशास्त्रियों के विचारों और सिद्धान्तों का संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है।

श्रीमती जोन रौबिन्सन
(MRS. JOAN ROBINSON)

मार्शल के शिष्य सम्प्रदाय में श्रीमती जोन रौबिन्सन का नाम अग्रगण्य है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र की महती परम्परा को बढ़ाने में इनका नाम बहुत ऊंचा है। उन पर मार्शल, पीगू और केन्स का प्रभाव दिखायी देता है। इनकी विश्लेषण प्रणाली प्रतिष्ठित (Classical) वर्ग की है और उन्हें नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की सदस्या कहा जा सकता है। इनके प्रधान ग्रन्थ निम्नलिखित हैं :

1. *The Economics of Imperfect Competition* (1933)
2. *Introduction to the Theory of Employment* (1937)
3. *An Essay on Marxian Economics* (1942)
4. *Collected Economic Papers* (1951)
5. *Rate of Interest* (1952)
6. *The Accumulation of Capital* (1956)

श्रीमती जोन ने यद्यपि अर्थशास्त्र के कई विषयों पर लिखा है, परन्तु उनका विशेष योगदान मूल्य के सिद्धान्त पर माना जाता है और इसी के लिए इतिहास में वे सदा स्मरण की जायेंगी। अन्य उल्लेखनीय योगदान उनका लगान का सिद्धान्त, उत्पत्ति के नियम पर उनके विचार एवं रोजगार तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था पर उनके विचार हैं। यहां पर उनके प्रधान विचारों का संक्षिप्त वर्णन है :

(1) **अपूर्ण प्रतियोगिता** (Imperfect Competition)—प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र में पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition) को सामान्य आर्थिक स्थिति स्वीकार किया गया है। बाद में अर्थशास्त्रियों ने अनुभव किया कि पूर्ण प्रतियोगिता एक काल्पनिक स्थिति है। व्यवहार में प्रतियोगिता अपूर्ण ही होती है। श्रीमती रौबिन्सन ने अपूर्ण प्रतियोगिता में मूल्य निर्धारण की समुचित व्याख्या की है।

Scanned by PDF Scanner

(2) **लगान का सिद्धान्त**—श्रीमती रौबिन्सन का लगान का सिद्धान्त भी अत्यन्त प्रसिद्ध है। यद्यपि मिल ने सर्वप्रथम यह कल्पना की थी कि उत्पत्ति के सब साधन लगान अर्जित कर सकते हैं। मार्शल ने आभास लगान (Quasi Rent) और योग्यता का लगान (Rent of Ability) के सिद्धान्त प्रतिपादित किये, परन्तु लगान का आधुनिक सिद्धान्त वस्तुतः श्रीमती रोबिन्सन की कृति है। उनके अनुसार प्रत्येक साधन लगान अर्जित कर सकता है और यह हस्तान्तरित आय (Transfer Earning) तथा वास्तविक आय (Actual Earning) का अन्तर है।

(3) **उत्पादन के नियम का संशोधन**—उनके अनुसार उत्पत्ति के नियम अनेक नहीं एक ही हैं और तीन कहे जाने वाले नियम वस्तुतः एक ही क्रम के तीन चरण हैं। "जब उत्पादन का एक साधन स्थिर रहता है और दूसरे साधन बढ़ाये जाते हैं तो एक बिन्दु के पश्चात् उत्पादन घटती हुई दर से बढ़ता है।" इसका कारण बताते हुए वे लिखती हैं, "उत्पादन घटने का नियम यह बताता है कि एक साधन दूसरे साधन पर एक सीमा तक ही प्रयुक्त हो सकता है। दूसरे शब्दों में साधनों के प्रतिस्थापन की लोच सीमित होती है।"

श्रीमती रौबिन्सन के अनुसार जिस बिन्दु पर औसत लागत और सीमान्त लागत बराबर होते हैं वही बिन्दु लागत बढ़ने का या उत्पत्ति घटने का होता है।

इस सिद्धान्त में यद्यपि तबसे काफी सुधार हो चुका है, परन्तु कई महत्वपूर्ण विचार श्रीमती रौबिन्सन ने दिये इसमें सन्देह नहीं है।

श्रीमती जोन रौबिन्सन ने इसके अतिरिक्त रोजगार में तथा श्रम की मांग के विषय में महत्वपूर्ण विचार दिये हैं। श्रीमती रौबिन्सन का स्थान इतिहास में सुरक्षित है।

लियोनेल रौबिन्स
(LIONEL ROBBINS)

आधुनिक अर्थशास्त्र में रौबिन्स की ख्याति मार्शल के सशक्त आलोचक के रूप में हुई है। इंगलैण्ड के अर्थशास्त्र की प्रसिद्ध परम्परा में रौबिन्स एक महत्वपूर्ण अर्थशास्त्री हैं। इनका जन्म 1898 में हुआ। 1929 में वे लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में अर्थशास्त्र में आचार्य रहे। 1944 में ब्रेटनवुड के ऐतिहासिक सम्मेलन में ब्रिटेन के प्रतिनिधि की हैसियत से गये। अभी भी ब्रिटेन के शिक्षा के क्षेत्र में उनका अग्रगण्य स्थान है।

उनके प्रधान ग्रन्थ निम्नलिखित हैं :

1. *The Great Depression* (1934)
2. *Economic Planning and International Order* (1937)
3. *An Essay on the Nature and Significance of Economic Science* (1939)
4. *Economic Problems in Peace and War* (1950)
5. *The Theory of Economic Policy in English Classical Economy* (1952)
6. *Robert Torrens and the Evolution of Classical Economy* (1951)
7. *Economics in the Twentieth Century* (1954)

रौबिन्स के प्रमुख आर्थिक विचार

(1) **अर्थशास्त्र की परिभाषा एवं क्षेत्र**—रौबिन्स अपने इस कार्य के लिए सर्वाधिक विख्यात हैं। अपने ग्रन्थ *An Essay on the Nature and Significance of Economic Science* में उन्होंने न केवल मार्शल की परिभाषा और क्षेत्र सम्बन्धी मान्यताओं का खण्डन किया है बल्कि अपनी परिभाषा एवं विचार दिये हैं। उनसे पूर्व मार्शल का विश्लेषण ही सर्वाधिक मान्य था, परन्तु रौबिन्स ने दूसरे ही दृष्टिकोण से अर्थशास्त्र की परिभाषा बतायी। उन्होंने लिखा, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव व्यवहार के उस पक्ष का अध्ययन करता है जिसमें उद्देश्य और वैकल्पिक उपयोग वाले दुर्लभ साधनों का सम्बन्ध होता है।" तात्पर्य यह है कि मनुष्य के उद्देश्य (आवश्यकताएं) असंख्य हैं जबकि साधन सीमित हैं। इन सीमित साधनों के द्वारा वह असंख्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास करता है। यह व्यवहार ही अर्थशास्त्र के अध्ययन का क्षेत्र है। रौबिन्स ने वैकल्पिक उपयोगों में चयन करना (Choice) अर्थशास्त्र की समस्या (Economic Problem) कहा है।

Scanned by PDF Scanner

रौबिन्स ने परिभाषा के अतिरिक्त क्षेत्र सम्बन्धी कई बातें कही हैं। उनके अनुसार **अर्थशास्त्र मूल रूप में शुद्ध विज्ञान** (Positive Science) है। उन्होंने मार्शल के इस कथन का खण्डन किया कि अर्थशास्त्र शुद्ध विज्ञान भी है, आदर्शवादी विज्ञान भी है और कला भी। उनके अनुसार अर्थशास्त्र का उद्देश्य विश्लेषण करना है यह बताना नहीं कि आर्थिक दृष्टि से क्या करना उचित है क्या अनुचित।

उन्होंने अर्थशास्त्र के नियमों को अन्य भौतिक विज्ञानों के नियमों के समान ही निश्चित बताया। मार्शल का कथन था कि अर्थशास्त्र के नियम अन्य भौतिक नियमों की अपेक्षा कम निश्चित होते हैं, परन्तु रौबिन्स ने इस कथन का खण्डन किया।

रौबिन्स ने स्पष्ट कहा है कि अर्थशास्त्र उद्देश्यों के औचित्य के विषय में पूर्ण तटस्थ है। वे लिखते हैं, ''अर्थशास्त्र उद्देश्यों के विषय में तटस्थ है। उद्देश्य आर्थिक या अनार्थिक नहीं होते। किसी कार्य को करने की विधियां आर्थिक या अनार्थिक हो सकती हैं, परन्तु उद्देश्य केवल उद्देश्य होते हैं।'' उन्होंने अर्थशास्त्र को मानव कल्याण का विज्ञान मानने से इन्कार किया है। वे लिखते हैं, ''अर्थशास्त्र का सम्बन्ध किसी भी बात से हो, परन्तु मानव कल्याण के कारणों से कदापि नहीं है।''

रौबिन्स की व्याख्या में नयी दिशा का संकेत है। वे अर्थशास्त्र को भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, आदि के समकक्ष रखने के पक्ष में हैं, अतः उसे किसी भी नैतिक पूर्वाग्रहों से मुक्त रखना चाहते हैं।

(2) **व्यापार-चक्र का सिद्धान्त**—रौबिन्स ने अपने ग्रन्थ '*The Great Depression*' में व्यापार-चक्र तथा 1930 की मन्दी पर प्रकाश डाला है और उसका एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया है। उसके अनुसार मन्दी का कारण उपभोग का कम होना नहीं बल्कि अतिविनियोग (Over Investment) के कारण उत्पादन की वृद्धि है। समृद्धिकाल में जो आय होती है वह उत्पादक वर्ग के पास ही जाती है, अतः वे उसका उपयोग अधिक उत्पादन में करते हैं। इस प्रकार मन्दी का प्रधान कारण समृद्धि (Boom) ही है। समृद्धि से उनका तात्पर्य उत्पादन में असाधारण वृद्धि से है। जब मूल्यों में लागतों के अपेक्षा अधिक वृद्धि होने लगती है तब लाभ बढ़ जाते हैं और इस अतिरिक्त लाभ का अधिक उत्पादन में उपभोग होता है। बैंकों से भी अधिक ऋण मिलने से अस्वाभाविक समृद्धि होती है जो किसी न किसी बिन्दु पर समाप्त होती है और अवसाद प्रारम्भ हो जाता है। रौबिन्स के विचार बहुत कुछ हेयक (Hayek) से मिलते-जुलते हैं। उन्होंने मन्दी का नियन्त्रण करने के कुछ सुझाव भी दिये हैं :

(1) पहली बात है विदेशी विनिमय की दर को स्थिर रखा जाय क्योंकि दर के उच्चावचनों के कारण आन्तरिक मूल्यों में परिवर्तन होते हैं जो व्यापार चक्रों को जन्म देते हैं। मूल्य बढ़ते ही अस्वाभाविक समृद्धिकाल प्रारम्भ हो जाता है जिसका अन्त मन्दी में होता है।

(2) दूसरी बात है आन्तरिक मूल्यों को घटने-बढ़ने से रोकना। मुद्रा प्रसार या संकोच को विभिन्न उपायों से रोकने की कोशिश करनी चाहिए।

(3) मन्दी दूर करने के उपायों में लागत घटाने के प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि इससे व्यापार तथा उद्योग में लाभ उत्पन्न होता है और उत्पादन में वृद्धि होती है। परन्तु यह एक अल्पकालीन सुधार के रूप में ही होना चाहिए।

(4) **अन्तर्राष्ट्रीय योजना**—रौबिन्स ने एक अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की कल्पना भी की थी। अपने ग्रन्थ '*Economic Planning and International Order*' (1937) में उन्होंने एक ऐसी योजना की रूपरेखा तैयार की थी जिसमें विदेशी विनिमय स्थिर हो और व्यापार पर किसी प्रकार का नियन्त्रण न हो। यहां तक कि श्रम और पूंजी के आवागमन पर भी कोई रोक-टोक न हो। उन्होंने एक विश्व राज्य और एक विश्व आर्थिक समाज की कल्पना की थी। यूरोपियन साझा बाजार अपने स्वप्न को आंशिक रूप से साकार कर रहा है यद्यपि उसमें अभी वे लक्षण उत्पन्न नहीं हो पाये जो वे चाहते थे। इस कल्पना का उत्तरार्द्ध उनके दूसरे ग्रन्थ '*Economists in the 20th Century*' में मिलता है। इस पुस्तक में उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के द्वारा देशों के पुनर्निर्माण की बात लिखी है। उनके दो सुझाव हैं एक तो विनिमय की दर को स्थिर रखना और दूसरा आन्तरिक मूल्य स्तर को स्थिर रखना।

Scanned by PDF Scanner

जे. आर. हिक्स
(J. R. HICKS)

अर्थशास्त्र के संसार भर के छात्र हिक्स के नाम से परिचित हैं। उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में शिक्षा पायी और फिर लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में प्राध्यापक हो गये। फिर कई उच्च पदों पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, मैनचेस्टर विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, आदि में कार्य किया। 1972 में इनको नोबेल पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इनके प्रधान ग्रन्थ निम्नलिखित हैं :

(1) *Theory of Wages* (1932)
(2) *Value of Capital* (1939)
(3) *Taxation of Wealth* (1941)
(4) *Standards of Local Expenditure* (1943)
(5) *Incidence of Local Rates* (1945)
(6) *A Contribution to the Theory of Trade Cycles* (1950)
(7) *A Revision of Demand Theory* (1956)
(8) *Essay in World Economics* (1959)

इनके अतिरिक्त उनके बहुत से शोध-पत्र विशेष पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आधुनिक अर्थशास्त्रियों में हिक्स नाम अग्रगण्य है और आर्थिक विचारों के इतिहास में उन्होंने स्थान प्राप्त कर लिया है। हिक्स की विशेषता अर्थशास्त्र में उनके गणित की नवीन प्रणालियों का प्रयोग है। वैसे सिद्धान्तों के क्षेत्र में भी उनका काफी योगदान है। हिक्स के मुख्य योगदान को इस प्रकार लिखा जा सकता है :

(1) **उपयोगिता का विश्लेषण**—हिक्स ने उपयोगिता का सुन्दर विश्लेषण किया है और उपभोग के विविध पक्षों पर मौलिक कार्य किया है। मार्शल का कथन था कि उपयोगिता को मुद्रा के द्वारा नापा जा सकता है। यह गणना वाचक प्रणाली (Cardinal Method) के नाम से विख्यात है। हिक्स ने इस विचार का खण्डन किया। उनका कथन है कि उपयोगिता नापी नहीं जा सकती, परन्तु दो या अधिक वस्तुओं की उपयोगिताओं की तुलना की जा सकती है। यदि उपभोक्ता किसी वस्तु को अधिक पसन्द करता है तो यह इस बात का प्रमाण है कि उसमें अधिक उपयोगिता है। यदि उपयोगिताएं समान हो जाती हैं तो वह उदासीन या तटस्थ (Indifferent) हो जाता है। इसकी जांच करने के लिए हिक्स ने तटस्थता वक्रों (Indifference Curves) का प्रयोग किया। अर्थशास्त्र में यह प्रणाली क्रमवाचक पद्धति (Ordinal Approach) के नाम से विख्यात है।

तटस्थता वक्रों के द्वारा हिक्स ने न केवल उपभोग बल्कि उत्पादन, विनिमय, करारोपण, आदि के प्रभाव को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उन्होंने उपभोक्ता साम्य के सिद्धान्त में भी इस पद्धति का उपयोग किया और आय के परिवर्तन का उपभोक्ता की बचत पर प्रभाव समझाया।

मार्शल के उपयोगिता ह्रास के नियम (Law of Diminishing Utility) के स्थान पर हिक्स ने प्रतिस्थापन की घटती हुई दर के नियम (Law of Diminishing Rate of Substitution) को प्रतिपादित किया।

(2) **उपभोक्ता का साम्य** (Equilibrium of Consumer)—इसी विश्लेषण को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने उपभोक्ता के साम्य के सिद्धान्त का भी प्रतिपादन किया। इसको भी उन्होंने तटस्थता वक्रों की सहायता से समझाया। उसके अनुसार अधिकतम सन्तोष पाने के लिए उपभोक्ता एक सन्तुलन की अवस्था प्राप्त करने का प्रयास करता है। जब मूल्य रेखा (Price line) तटस्थता वक्र को स्पर्श करती है तब उसका सन्तोष अधिकतम होता है। हिक्स का यह सिद्धान्त मार्शल के समसीमान्त उपयोगिता के सिद्धान्त से अधिक युक्तिपूर्ण माना जाता है। हिक्स ने इसी व्याख्या में यह भी समझाया है कि आय (Income) मूल्य (Price) तथा प्रतिस्थापन (Substitution) में परिवर्तन होने से किस प्रकार उपभोक्ता का यह साम्य भंग हो जाता है और नवीन साम्य स्थापित होता है।

(3) **ब्याज का सिद्धान्त**—हिक्स का ब्याज का सिद्धान्त यद्यपि कीन्स के तरलता अधिमान सिद्धान्त (Liquidity Preference Theory) पर आधारित है, परन्तु उन्होंने उसमें संशोधन भी किया है। हिक्स यह मानते हैं कि मुद्रा में सामान्य स्वीकृति (General Acceptability) होती है अर्थात् कोई भी मुद्रा को स्वीकार

Scanned by PDF Scanner

करने को तैयार होता है, परन्तु धन अपने अन्य रूपों में जैसे प्रतिभूति (Security) के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता, अतः मुद्रा को उधार देने के लिए जो राशि दी जाती है वही ब्याज है। केन्स इसे तरलता त्यागने का पुरस्कार कहते हैं। इसमें हिक्स विनियोग के व्यय और भविष्य के जोखिम का पुरस्कार का प्रभाव ब्याज की दर मानते हैं। इस प्रकार उन्होंने प्रतिष्ठित विचार के कुछ तत्वों का भी समावेश ब्याज के सिद्धान्त में किया है।

(4) **व्यापार-चक्र**—हिक्स ने व्यापार-चक्र के सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हुए मत व्यक्त किया कि यह गुणक-त्वकन की परस्पर क्रिया के सिद्धान्त पर आधारित है।

हिक्स का मूल्यांकन—हिक्स ने बहुत कुछ लिखा है। इन सिद्धान्तों के अतिरिक्त उन्होंने मजदूरी, मूल्य के सिद्धान्त, जनसंख्या, आदि पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र की भी एक परिभाषा दी है, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो व्यापारिक मामलों का अध्ययन करता है।" जनसंख्या के सम्बन्ध में उनका मत है कि उद्योगों के विकास के द्वारा बेकारी और निर्धनता की समस्या सुलझायी जा सकती है, आदि।

हिक्स का प्रधान योगदान दो बातों का है जिसके लिए वे विख्यात हैं। एक तो उनका मांग तथा उपभोग का विश्लेषण अद्वितीय है। उन्होंने इसमें नवीन दिशा दी है और मार्शल द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों में काफी सुधार किया है। उनका तटस्थता वक्र का व्यापक प्रयोग उनका दूसरा योगदान माना जायगा जिनका आजकल अर्थशास्त्र के प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है।

पी. ए. सैमुएल्सन
(P. A. SAMUELSON)

आधुनिक अर्थशास्त्रियों में पॉल सैमुएल्सन का नाम बहुत सम्मान से लिया जाता है। कुछ लोग इन्हें मार्शल की परम्परा का नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री मानते हैं, परन्तु अभी उनके विचारों का मन्थन चल रहा है और उनके वर्गीकरण का समय नहीं आया है। इतिहास में उनका स्थान बन चुका है यह निर्विवाद है। इनका जन्म 1915 में हुआ। मैसेचुसैट इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी के प्रोफेसर की हैसियत से उनको 1970 में अर्थशास्त्र को नोबिल पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे प्रथम अमरीकन अर्थशास्त्री थे जो अर्थशास्त्र में इस सम्मान को प्राप्त कर सके। इसके अतिरिक्त इसके पूर्व भी यह कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके थे। 1941 में डेविड ए. वेल्स पुरस्कार तथा 1947 में जे. बी. क्लार्क पुरस्कार प्राप्त कर चुके थे। सैमुएल्सन के प्रधान ग्रन्थ इस प्रकार हैं :

(1) *Foundations of Economic Analysis* (1949)

(2) *Linear Programming and Economic Analysis* (1948)

(3) *Economics* (1949)

(4) *Readings in Economics* (1965)

(5) *A Quantum Theory of Model of Economics* (1977)

(6) *Worldwide Stagflation* (1974)

इनमें इनकी पुस्तक Economics एक पाठ्य पुस्तक के रूप में अत्यन्त लोकप्रिय हुई है और संसार की सब प्रधान भाषाओं में उसके संस्करण छपे हैं। भारत में भी यह पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय है।

सैमुएल्सन का अर्थशास्त्र गणित से बहुत अधिक प्रभावित है। इन पर जे. एम. कीन्स, मार्शल, हिक्स का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। खास तौर पर कीन्स की समष्टि आर्थिक प्रणाली का उन्होंने बहुत उपयोग किया है। कीन्स के सिद्धान्तों को विकसित करने में भी इनका बहुत योगदान रहा है।

सैमुएल्सन के विचार—सैमुएल्सन के विचारों का गम्भीरता से मूल्यांकन हो रहा है, परन्तु कुछ सिद्धान्त अर्थशास्त्र में स्वीकृत हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं :

(1) **प्रकट-अधिमान का सिद्धान्त** (Revealed Preference Theory)—यह उनका उपभोग के क्षेत्र में योगदान है जो कि उन्होंने एक निबन्ध "*Consumption Theory in Terms of Revealed Preference*" में लिखा था जो 1948 में प्रकाशित हुआ था।

Scanned by PDF Scanner

यह सिद्धान्त उपयोगिता के विश्लेषण में एक नवीन सिद्धान्त माना जाता है। उपयोगिता के क्षेत्र में दो विचार प्रचलित हैं। एक मार्शल का संख्यावाचक विचार (Cardinal Theory) जिसके अनुसार किसी वस्तु की उपयोगिता मुद्रा के द्वारा नापी जा सकती है जो कि व्यक्ति उस वस्तु के लिए देने को तैयार होता है। दूसरा सिद्धान्त प्रो. हिक्स का है जिसको क्रमवाचक (Ordinal Theory) कहते हैं जिसके द्वारा उपयोगिता को नापा तो नही जा सकता, परन्तु उनको प्राथमिकता के आधार पर एक क्रम में रखा जा सकता है जिससे पता चलता है कि किस वस्तु में उपयोगिता अधिक है किस में कम है। हिक्स ने इसी आधार पर तटस्थता या उदासीनता वक्रों का प्रयोग किया है। सैमुएल्सन का प्रकट अधिमान सिद्धान्त (Revealed Preference Theory) इसी विश्लेषण को और आगे बढ़ाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार उपभोक्ता किसी समान उपयोगिताओं वाले दो संयोगों में जब किसी एक का चयन करता है तो वह उसके अधिमान या पसन्दगी का चयन प्रकट (Reveal) करता है। इसका अर्थ यह है अन्य सब संयोग उसके लिए कम उपयोगिता को दिखाते हैं।

यदि 'अ' तथा 'ब' दो वस्तुएं हैं जिनका मूल्य दिया हुआ है और उपभोक्ता की आय भी दी हुई है। उपभोक्ता अपनी मूल्य की रेखा KM पर कोई भी संयोग (यानी दो वस्तुओं की मात्रा) खरीद सकता है। वह उन वस्तुओं को खरीदेगा जिनमें उसे कम लागत लगती है। वह जिस संयोग को भी खरीदता है उसके द्वारा उसका अधिमान (Preference) प्रकट (Reveal) होता है।

'अ' तथा 'ब' दो वस्तुएं हैं उपभोक्ता अपनी आय के द्वारा KM रेखा पर स्थित कोई भी संयोग यानी दो वस्तुओं की मात्रा खरीद सकता है। वह KMO त्रिभुज में नीचे के बिन्दु S तथा T के संयोग भी खरीद सकता है, परन्तु वह खरीदता है B संयोग की BQ मात्रा में 'अ' वस्तु और RB मात्रा में 'ब' वस्तु। यहीं वह अपनी प्राथमिकता या पसन्दगी या अधिमान को प्रकट या उद्घाटित करता है। यह सिद्धान्त उदासीनता (Indifference) को महत्व नहीं देता बल्कि अधिमान को महत्व देता है। उपभोक्ता समान उपयोगिताओं के संयोग में भी उदासीन नहीं रहता। किसी न किसी के प्रति अपनी पसन्दगी प्रकट करता ही है।

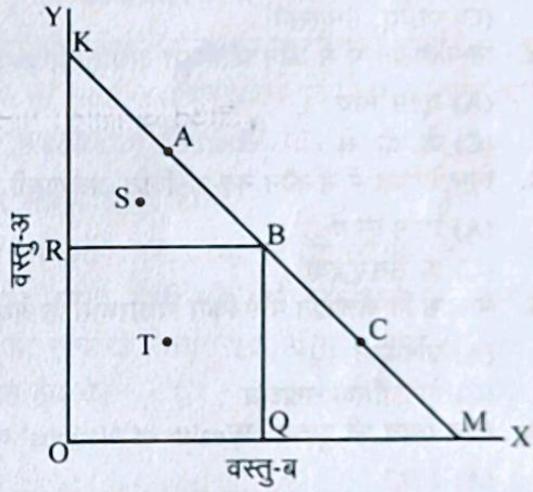

सैमुएल्सन का योगदान अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सम्बन्ध में भी महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने ओहलिन के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त को पूरा किया है। ओहलिन ने बताया कि व्यापार की वस्तु के रूप में कोई देश उस साधन (Factor) का निर्यात करता है जो उसके देश में प्रचुरता से पाया जाता है और जिसका मूल्य दूसरे देश की तुलना में कम है। सैमुएल्सन ने इस सिद्धान्त को साधन मूल्य समानीकरण (Factor Price Equalisation) का सिद्धान्त कहा है। उन्होंने न केवल ओहलिन की बात का समर्थन किया बल्कि उसको गणित के द्वारा सिद्ध भी किया। यह उनकी मौलिक कृति नहीं है, परन्तु जिस व्यक्ति के द्वारा इसकी पुष्टि की है उसके द्वारा सैमुएल्सन को ख्याति मिली है।

परन्तु सैमुएल्सन का अधिक महत्वपूर्ण योगदान यह है कि यह उन्होंने बताया है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का उत्पत्ति के साधनों की सापेक्षिक कीमत और वास्तविक आय (Real Income) पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस विषय पर जो थोड़ा बहुत कार्य हुआ वह पर्याप्त नहीं है। सैमुएल्सन तथा स्टॉल्पर (W. F. Stolper) का सम्मिलित कार्य प्रसिद्ध है। दोनों ने लिखा कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से दुर्लभ साधन को हानि होती है और प्रचुर साधन को लाभ होता है। राष्ट्रीय आय में दुर्लभ साधन का योगदान घटता है।

Scanned by PDF Scanner

महत्वपूर्ण प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री कौन थे? प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की विशेषताएं बताइए।

2. प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री किसे कहा जाता है? प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र का वर्गीकरण कीजिए।

3. नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री कौन थे? इस सम्प्रदाय के प्रमुख अर्थशास्त्रियों का उल्लेख कीजिए।

4. जे. आर. हिक्स के प्रमुख विचारों का वर्णन कीजिए।

5. रॉबिन्स का अर्थशास्त्र में क्या योगदान है? समझाइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री किसे कहा जाता है?

2. नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री कौन थे?

3. लियोनल रॉबिन्स का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

4. श्रीमती जोन रॉबिन्सन का लगान सम्बन्धी विचार बताइए।

5. विक्सटीड का अर्थशास्त्र में क्या योगदान है?

6. फ्रांसिस एजवर्थ का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के प्रवर्तक थे :

(A) एडम स्मिथ (B) एल्फ्रेड मार्शल
(C) पी. ए. सैम्युल्सन (D) श्रीमती जोन रौबिन्सन

2. निम्नलिखित में से कौन प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री कहा जाता है :

(A) एडम स्मिथ (B) रिकार्डो
(C) जे. बी. से (D) उपरोक्त सभी

3. निम्नलिखित में से कौन नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री कहा जाता है?

(A) एडम स्मिथ (B) जे. आर. हिक्स
(C) फ्रांसिस एजवर्थ (D) जे. एस. मिल

4. माल्थस निम्नलिखित में से किस विचारधारा के अर्थशास्त्री थे :

(A) प्रतिष्ठित (B) नव-प्रतिष्ठित
(C) ऐतिहासिक सम्प्रदाय (D) राष्ट्रवाद

5. एडम स्मिथ की पुस्तक 'Wealth of Nations' कब प्रकाशित हुई थी?

(A) 1723 (B) 1762
(C) 1776 (D)1790

6. पुस्तक 'Value and Capital' के लेखक थे:

(A) जे. आर. हिक्स (B) जे. एम. कीन्स
(C) जे. बी. क्लार्क (D) आर. जी. हाट्रे

7. निम्नलिखित में से कौन आधुनिक अर्थशास्त्री माना जाता है?

(A) पी. ए. सैम्युल्सन (B) मिल्टन फ्रीडमैन
(C) जे. आर. हिक्स (D) उपरोक्त सभी

[**उत्तर : 1.** (B), **2.** (D), **3.** (C), **4.** (A), **5.** (C), **6.** (A), **7.** (D)]

Scanned by PDF Scanner